सहज कविता

अद्यतन कविता की त्रैमासिकी

अंक-4 अक्टूबर-दिसम्बर 1994

सम्पादक—डॉ० सुधेश

हिन्दी अकादमी, दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार

समुदाय भवन, पदम नगर, किशन गंज, दिल्ली-110007

दूरभाष—730274, 733488, 7521889

प्रान्तीय ईर्ष्या-द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिन्दी प्रचार से मिलेगी उतनी और किसी भी चीज से नहीं मिल सकती।

—'सुभाष चन्द्र बोस'

नेताजी के सपनों को साकार करने के उद्देश्य से हिन्दी अकादमी, दिल्ली निम्नलिखित 'हिन्दी प्रसार केन्द्रों' का संचालन कर रही है। इनमें निम्नलिखित सुविधाएं उपलब्ध हैं :—

क. पुस्तकालय एवं वाचनालय के साथ-साथ हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि के प्रशिक्षण की व्यवस्था।

ख. प्रवेश व प्रशिक्षण नि:शुल्क।

ग. टंकण केन्द्र प्रात: 10 बजे से सायं 5.30 बजे तक (द्वितीय शनिवार, प्रत्येक रविवार अवकाश)।

केन्द्रों का स्थान

1. हिन्दी टंकण एवं आशुलिपि केन्द्र, समुदाय भवन, पदम नगर, किशनगंज, दिल्ली-110007
2. हिन्दी प्रसार केन्द्र, गांधी भवन, दिल्ली विश्वविद्यालय, 32, छात्र मार्ग, दिल्ली-110007
3. हिन्दी प्रसार केन्द्र, ए-26/27 सनलाइट इंश्योरेंस बिल्डिंग, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
4. हिन्दी प्रसार केन्द्र, नगर निगम प्राथमिक पाठशाला, महिपालपुर, दिल्ली
5. हिन्दी प्रसार केन्द्र, आर्य समाज मन्दिर, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034
6. हिन्दी प्रसार केन्द्र, श्री सनातन धर्म सभा, स्वामी विवेकानन्द नगर (निमड़ी कालोनी), दिल्ली-110052

इच्छुक व्यक्ति कृपया प्रभारी, हिन्दी प्रसार केन्द्र से सम्पर्क करें।

(डॉ० रामशरण गौड़)
सचिव

सहज कविता

त्रैमासिक

अक्तूबर-नवम्बर-दिसम्बर 1994

वर्ष 1 अंक 4

क्रम

विचार-विमर्श—		2
सहज कविता और लय		3
कविताएँ	—महेन्द्र भटनागर	8
हाइकु	मुकेश रावल	8
कविताएँ	—अंजनी कुमार दुबे 'भावुक'	9
	वीरेन्द्र सक्सेना	9
	रेखा व्यास	10
	सुरेन्द्र 'नीलकण्ठ'	10
	कुसुमांजलि शर्मा	11
	फाल्गुनी घोष	11
	महिमा शर्मा	12
ग़ज़ल	हरेराम समीर	12
	चिरंजीत	13
	कृपा शंकर शर्मा	14
	सुधेश	14
मूल्यांकन		15
'सहज कहानी' के बहाने सहजता—अमृतराय		16

श्रीमती सुशीला शर्मा द्वारा 1335 पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067 से प्रकाशित। तरुण प्रिंटर्स, 9267 पश्चिमी रोहताश नगर, शाहदरा, दिल्ली-110032 द्वारा मुद्रित,

अवैतनिक सम्पादक—डॉ० सुधेश प्रबन्ध सम्पादक प्रद्युम्न शर्मा

मूल्य : छः रुपये, वार्षिक चौबीस रुपये। संस्थाओं के लिए तीस रुपये।

आजीवन सदस्यता—पाँस सौ रुपये

विचार-विमर्श

'सहज कविता' का दूसरा अंक प्राप्त हुआ।···अद्यतन हिन्दी कविता की असहजता को कम करने का कोई भी प्रयास श्लाघ्य है। मैं छन्द के प्रति ऐसा आग्रह नहीं करता लेकिन लय का लुप्त होना सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण है। अस्तु, पत्रिका का स्वागत है।

—डॉ० नरेश (चण्डीगढ़)

'सहज कविता' (अंक 1) को आद्यन्त पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ। जीना सीख अगर मैं पाऊँ' कविता (दिनेशचन्द्र द्विवेदी) पर दृष्टि पड़ी। इस कविता ने मेरे···मर्म को छुआ और लगा कि···त्रिलोचन, बाबा नागार्जुन की पीढ़ी की कोख में जन्मा यह कवि प्रगतिशील विचारधारा का नव्य संस्करण है।···'सम्पादकीय' कविता की समीक्षा का ऐतिहासिक दस्तावेज है···जिससे कविता की नई भूमि तोड़ने में सहायता मिल सकेगी।

—डॉ० नारायण दास समाधिया (उरई०, उ० प्र०)

अपने लघु कलेवर में साहित्यिक जीवन्तता समेटे यह पत्रिका समकालीन व्यावसायिक अन्धकार में प्रकाश की किरण लगी।···डॉ० सुधेश के सम्पादकीय 'सहज कविता की आवश्यकता'···में अद्यतन कविता की ईमानदार पड़ताल की गई है।···यद्यपि 'सहज कविता' को किसी नये आन्दोलन का पर्याय होने से इनकार किया गया है तथापि···भविष्य का काव्येतिहास 'सहज कविता' के इस प्रथम अंक को काव्यक्षेत्र में नये युग का शुभारम्भ मानेगा।

—डॉ० दिनेशचन्द्र द्विवेदी (उरई)

'सहज कविता' का अभियान···हिन्दी काव्य के लिए एक···उद्धारक कार्य है। इस आन्दोलन···से काव्यक्षेत्र का प्रदूषण समाप्त होगा और···प्रबुद्धपाठक सहज कविता की पावन सलिला में डुबकी लगाकर अपनी तपन बुझा सकेगा।

—डॉ० इन्द्र सेंगर (दिल्ली)

कविता प्रेमियों से

इस अंक के साथ पुराने सदस्यों का सदस्यता-शुल्क पूरा हो गया। उनसे नवीनीकरण कराने का आग्रह है। युवा कवियों, कविता-प्रेमियों से आग्रह है कि वे 'सहज कविता' के सदस्य बन कर इसे जारी रखने का संबल प्रदान करें। सदस्यता शुल्क सम्पादक को मनीआर्डर से भेज सकते हैं। सुरुचिपूर्ण विज्ञापन भी स्वीकार किए जाएँगे। अपनी प्रतिक्रिया लिखें।

—सम्पादक

सहज कविता और लय

सहज कविता की लयात्मकता उसका आवश्यक गुण है। पर लय के बारे में भी कुछ भ्रान्तियां प्रचलित हैं। एक भ्रांति यह है कि अर्थ की भी कोई लय होती है। इसे 'नयी कविता' आंदोलन के पुरोधाओं ने फैलाया था। इसका प्रभाव आज भी कुछ कवियों पर देखा जा सकता है।

भुवनेश्वर से डॉ० तारिणी चरण दास 'चिदानन्द' ने मुझे लिखा—"कविता पूरे गद्य में भी लिखी जा सकती है, परन्तु काव्यात्मक होने से वंचित नहीं हो सकती।" उस 'पूरे गद्य' की कविता में क्या अर्थ की लय होगी? अर्थ की लय का तर्क कविता को गद्य की तरफ ले गया। कविता और गद्य में लय का जो मूलभूत अन्तर है, उसके लुप्त होने पर कविता और गद्य में अन्तर नहीं रह गया।

इस भ्रान्त मान्यता से मेरा मौलिक विरोध इस आधार पर है कि लय मूलतः शब्द की होती है, अर्थ की नहीं। कविता जब आदिम युग में शत प्रतिशत मौखिक थी, तब कविता के शब्द के उच्चारण से लय उत्पन्न होती थी। शब्द के उच्चारण से लय का घनिष्ठ सम्बन्ध तब भी था और आज भी है। उच्चारण के बिना लय का सामान्यतः अनुमान नहीं किया जा सकता। लय शब्दों में निहित होती है और कविता में वह शब्दों के क्रम का निर्धारण भी करती है। कविता के पारखी उच्चारण के बिना भी लयात्मक विशेषता को समझ सकते हैं, पर शब्द मूलतः उच्चारण के लिए हैं। शब्द का मूल अर्थ भी ध्वनि है। ध्वनि की अबाध निरन्तरता ही लय उत्पन्न करती है। अतः लय का सम्बन्ध शब्द से है, भले ही शब्द अर्थ से गुम्फित है। लिपि के आविष्कार से जब कविता लिपिबद्ध हुई तब कविता का शब्द लिखित रूप में भी सामने आया, अर्थात वह उच्चारण के साथ पाठ का भी माध्यम बना। कविता के लिपिबद्ध होने से एक महत्वपूर्ण अन्तर यह पड़ा कि कविता का शब्द केवल स्मरणशक्ति पर निर्भर न रहकर भोजपत्र, कपड़े या कागज़ पर सुरक्षित होने लगा। पर लिपिबद्ध होने पर भी कविता के शब्द का उच्चारण से सम्बन्ध-विच्छेद नहीं हो गया। कविता के शब्द का उच्चारण उसका पाठ है, जिसे कविता-पाठ कहा जा सकता है। 'पाठ' का शाब्दिक अर्थ भले ही पढ़ना हो, पर कविता का पाठ उसका केवल पढ़ा जाना नहीं होता। कविता-

पाठ वस्तुत: कविता का लयात्मक पाठ होता है ।

ऊपर के विवेचन का आशय यही है कि कविता का शब्द जब आदिम युग में मुख्यत: मौखिक था, तब भी वह लयात्मक था और आधुनिक युग में जब कविता का शब्द मुख्यत: पाठ्य है, तब भी वह लयात्मक है। कविता के शब्द के उच्चारण अथवा पाठ में लय की महत्वपूर्ण भूमिका है।

इसी कारण मेरा विचार है कि लय शब्द से सम्बन्धित है, अर्थात वह शाब्दिक है। शब्द का मूल अर्थ भी ध्वनि है। भाषा का प्रारम्भिक स्वरूप भी ध्वनि से सम्बन्धित है। भाषा की लिपि उसकी ध्वनियों का लिखित रूप है। तो अर्थ की लय के तर्क से कविता को उसकी नैसर्गिक तथा सहज लय से अलग करके नहीं देखा जा सकता। लय कविता का स्वाभाविक, सहज गुण है। इसलिए लयात्मक होकर कविता अपने स्वाभाविक, सहज गुण को पाती है।

लय के बारे में दूसरी भ्रांति यह है कि गद्य की भी लय होती है। वास्तव में कविता की प्रकृति लयात्मक होती है, जबकि गद्य की प्रकृति लयात्मक नहीं है। शब्दों के क्रमिक अबाध स्वरात्मक प्रयोग से लय उत्पन्न होती है और इसमें स्वर की एक निरन्तरता होती है। शब्दों के क्रमिक तथा अबाध प्रयोग से उत्पन्न प्रवाह की निरन्तरता ही लय कहलाती है। कविता में प्रवाह की यह निरन्तरता मिलती है अथवा वह उसमें काम्य है। गद्यरचना में शब्द-प्रयोग का स्वरात्मक या संगीतात्मक होना आवश्यक नहीं है और न काम्य है, क्योंकि गद्य एक व्यावहारिक और चिन्तन प्रधान विधा है, जिसकी माँग व्यावहारिक तर्क के आधार पर किसी विषय को प्रस्तुत करना अथवा स्पष्ट करना है। इसका मतलब यह नहीं है कि कविता का कोई तर्क नहीं है और चिन्तन से उसका कोई सम्बन्ध नहीं है। कविता का तर्क भावना और कल्पना के सहारे आगे बढ़ता है और गद्य का तर्क प्राय: व्यावहारिक और कभी शास्त्रीय होता है। गद्य की आवश्यकताओं के कारण उसमें शब्द प्रयोग का स्वरात्मक या लयात्मक होना अनिवार्य नहीं है। तब गद्य की भी लय होती है, यह कहकर गद्य के साथ लय को मनमाने ढंग से बलपूर्वक जोड़ा नहीं जा सकता।

इस बात को यदि इसकी अन्तिम परिणति तक पहुँचाया जाए तो पूछा जा सकता है कि कुछ लोगों के लिए यदि कविता में लय की आवश्यकता नहीं है तो फिर उसे गद्य में खोजने की क्या आवश्यकता है?

कविता और गद्य में अन्तर मुख्यत: लय के आधार पर किया जा सकता है। यदि गद्य में भी लय के अस्तित्व को स्वीकार किया जाए, और अर्थ की लय के तर्क पर लय की भी मनमानी व्याख्या की जाए तो मैं पूछना चाहता हूं कि तब कविता और गद्य में अन्तर किस आधार पर किया जाएगा? जो कविता के नाम पर गद्य लिख रहे हैं और उसे श्रेष्ठ कविता की महिमा से मण्डित कर रहे हैं, उनके लिए

यह प्रश्न निरर्थक और अप्रासंगिक होगा क्योंकि उन्होंने कविता और गद्य का अंतर मिटा दिया है।

डॉ० रामविलास शर्मा ने शमशेर बहादुर सिंह के निबन्ध-संग्रह 'दोआब' के नये संस्करण की भूमिका के रूप में एक लेख लिखा था, जिसे 'अच्छे गद्य की पहचान' शीर्षक से सर्वेश्वर दयाल सक्सेना और मलयज द्वारा सम्पादित पुस्तक 'शमशेर' में छापा गया है। इस लेख में डॉ० शर्मा ने सूचना दी है—"जुलाई 1941 के 'हंस' में मुक्तछन्द पर उनका (शमशेर का) एक लेख छपा था, जिसमें उन्होंने इस मुक्तछन्द की भूमिका के बारे में लिखा था, कवियों और गद्य-लेखकों का सामान्य अन्तर इसने मिटा सा दिया है। यह बात हिन्दी काव्य पर उस समय पूरी तरह लागू न होती थी, आज कितनी सच है, हर कोई देख सकता है।" मेरा विचार है कि मुक्तछन्द ने कविता और गद्य का अन्तर नहीं मिटाया बल्कि तथाकथित छन्दमुक्त कविता अर्थात छन्दहीन कविता का प्रचलन हिन्दी कविता को गद्य की तरफ ले गया।

डॉ० शर्मा ने उक्त लेख में यह भी लिखा है कि "गद्य का विरोधी भाव प्रकट करने वाला शब्द पद्य है, कविता नहीं।" और उन्होंने शमशेर की कविता में गद्य के प्रयोग की चर्चा भी की है। यह सही है कविता का विधान पद्य की छन्दबद्धता की तुलना में खुलापन रखता है और कविता का यह खुलापन छन्द की अनिवार्यता नहीं मानता और वह गद्य के गुणों का उपयोग भी कर सकता है (जैसा शमशेर ने अपनी कविता में किया), पर डॉ० शर्मा के उक्त कथन में कविता की प्रकृति की ओर संकेत किया गया है, कविता और गद्य को एक नहीं माना गया है, अन्यथा उक्त लेख में वे यह न लिखते कि "कवियों और गद्य लेखकों का सामान्य अन्तर इसने (अर्थात मुक्त छन्द ने) मिटा सा दिया है।" महत्वपूर्ण बात यह कि वे कविता और गद्य के अन्तर को मिटाने का समर्थन करते प्रतीत नहीं होते।

डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी अपनी पुस्तक 'भाषा और संवेदना' में सम्मिलित निबन्ध 'काव्य-भाषा का स्वरूप' में कविता और गद्य में अन्तर लय के आधार पर नहीं 'विम्बगठन' के आधार पर करते हुए लिखते हैं—"गद्य और कविता की भाषा में अन्तर बिम्बगठन के कारण होता है (और दोनों में यही तो विभाजक अन्तर है)। कविता की भाषा पाठक या श्रोता को बिम्बों अथवा भाव बिम्बों का आधार प्रदान करती है।...गद्य प्रधानतः वर्णन की भाषा है।" (पृष्ठ 17) डॉ० चतुर्वेदी पश्चिम की रूपवादी आलोचना से इतने प्रभावित हैं कि वे कविता की अन्तिम सफलता उसके बिम्बों और प्रतीकों में मानते हैं और सहज भाषा अथवा सीधी-सादी भाषा अथवा लोकभाषा को कविता के लिए उपयुक्त नहीं मानते। बिम्बगठन कविता में होता है, पर वह कविता के विधान की अन्तिम शर्त नहीं है, जिसके बिना कविता नहीं हो सकती। बिम्बनिर्माण गद्य-रचनाओं में भी होता है। प्रतीकों का प्रयोग गद्य-

रचनाओं में भी होता है। यहां उदाहरण देने का स्थान नहीं है। पर बिम्बात्मकता पर कवियों की इजारेदारी नहीं है, और प्रतीकात्मक कौशल पर केवल कवियों का एकाधिकार नहीं है। सृजनात्मक गद्य की भाषा अनिवार्यत: कोरी वर्णनात्मक नहीं होती। वह कविता की तरह बिम्बात्मक और प्रतीकात्मक भी हो सकती है।

कविता की भाषा का गद्य की भाषा से अन्तर बताते हुए डॉ० चतुर्वेदी ने उसी लेख में लिखा है कि "गद्य के शब्द अर्थ के चरमरूप को अभिव्यक्त करते हैं।" (पृष्ठ 17) पर यह स्थापना शास्त्रीय भाषा पर अधिक लागू होती है, सर्जनात्मक गद्य की भाषा पर नहीं। सृजनात्मक गद्य की भाषा में प्रयुक्त शब्द के अर्थ भी कविता के शब्द की तरह खुले होते हैं। तात्पर्य यह कि कविता और गद्य की भाषा का अन्तर 'बिम्ब-गठन' को लेकर नहीं है, क्योंकि बिम्बात्मक प्रयोग कविता और गद्य दोनों में सम्भव है, बल्कि कबिता और गद्य में मुख्य अन्तर लय के आधार पर होता है। कविता की भाषा लयात्मक होती है अथवा उसमें लयात्मकता काम्य है, जबकि गद्य की भाषा में शब्दों का लयात्मक क्रम अथवा लय का आग्रह नहीं होता। तो लयात्मकता कविता का सहज गुण है। कविता यदि गद्य से अलग है तो कविता की भाषा गद्य की भापा से अलग होगी ही। पर गद्य की भाषा हमेशा शास्त्रीय भाषा नहीं होती। सर्जनात्मक गद्य और कविता की भाषा में कुछ समान तत्व हो सकते हैं, पर उनमें मुख्य अन्तर लय के स्तर पर है।

मैंने 'सहज कविता' में लय की आवश्यकता पर बल दिया, पर उसमें लयात्मक प्रयोग की अनन्त सम्मावनाएं हैं, क्योंकि लयात्मक प्रयोग की अनेक विधियाँ हैं। लय की अनेकता के आधार पर ही अनेक भाषाओं में अनेक छन्दों का आविष्कार हुआ। छन्द की अनेकता लय की अनेकता की ही सूचक है। छन्द का आधार ही लय है। अब थोड़ा विचार कविता में लयात्मक प्रयोग की विविधता पर कर लिया जाए।

प्रत्येक कविता में एक-सी लय नहीं होती, और न लय ही एक-सी होती है। कविता के कथ्य की आवश्यकता के अनुसार कवि ने जिस प्रकार की लय को अपनाया है उसका निर्वाह पूरी कविता में होना काम्य है, यदि इसके विपरीत दूसरी आवश्यकता न हो। यदि कविता का प्रारम्भ द्रुतलय में हुआ है तो उसका निर्वाह होना चाहिए। यदि कविता की लय विलम्बित है तो अन्त तक वही रहनी चाहिए। छन्दशास्त्र की शब्दावली में कहा जा सकता है कि मात्रिक छन्द की कविता में लय का विधान भी मात्रिक होना चाहिए। उसमें वर्णिक छन्द की लय अटपटी लगेगी। हिन्दी में मात्रिक छन्दों की लय का अधिक प्रचलन है और उर्दू में वर्णिक छन्द की लय अधिक अपनाई जाती है, पर हिन्दी में घनाक्षरी और सवैया जैसे वर्णिक छन्द भी हैं, जिनका लयात्मक विधान उर्दू कविता के स्वतन्त्र लयात्मक विधान की तरह है। मात्रिक लयात्मक विधान में 'चेहरा' शब्द की पांच मात्राएं मानी जाएंगी,

जबकि उर्दू कविता में 'चे' को ह्रस्व स्वर की तरह पढ़कर इस शब्द की केवल चार मात्राएं होंगीं। उर्दू कविता में 'है' का उच्चारण दीर्घ तथा ह्रस्व दोनों रूपों में होता है। तो हिन्दी कवि को तय करना होगा कि वह किस कविता में कौन-सा लयात्मक विधान अपनायेगा। यदि वह किसी कविता में वर्णिक छन्द के लयात्मक विधान को अपनाता है (उर्दू की तरह) तो उस पर यह आरोप लगाना ग़लत होगा कि उसने 'वह' के स्थान पर 'वो' लिखकर ग़लती की। 'वह' का उच्चारण 'वो' की तरह ह्रस्व रूप में नहीं हो सकता। सम्भव है कि इसीलिए हिन्दी कवि ने 'वह' के स्थान पर 'वो' और 'यह' के स्थान पर 'ये' लिखा हो। लयात्मक आग्रह के अधीन किये गये नये प्रयोगों को व्याकरणिक तथा परम्परागत छन्दशास्त्रीय आधारों पर परखना ठीक नहीं होगा। सम्भव है कि ऐसे प्रयोगों के मूल्यांकन के लिए भविष्य में नये काव्यशास्त्र का निर्माण हो। पर आलोचक से पहले कविता के प्रति उत्तरदायित्व कवि का है। कवि कविकर्म को गम्भीरता से नहीं लेंगे तो हिन्दी कविता का उद्धार उसके आलोचक के हाथों नहीं होगा।

एक और बात। भेद-उपभेद के बाद समस्त छन्दों की संख्या निश्चित और सीमित है। पर लयात्मक विधियां अनन्त हो सकती हैं। इसलिए छन्द की तुलना में कवि लयात्मक प्रयोगों में अधिक स्वतन्त्र होता है, पर यह स्वतन्त्रता उच्छृंखलता नहीं है, बल्कि साधना और आत्मानुशासन की मांग करती है। पर आज हिन्दी कविता की अराजकता के युग में आत्मानुशासन और उत्तरदायित्व की बात करना ख़तरनाक है। फिर अनेक कवियों और आलोचकों ने कविता के लिए लय को भी अनावश्यक बता दिया है और लय की भ्रष्ट व्याख्या करके (अर्थ की लय की बात करके) लय के प्रति भी युवा कवियों में भ्रम पैदा करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। इस अराजकता का व्यापक परिणाम यह दिखाई दे रहा है कि कविता और गद्य का अन्तर ही धूमिल नहीं हुआ बल्कि अच्छी कविता और खराब कबिता का भेद भी लुप्त होता जा रहा है। जो किसी दृष्टि से कविता नहीं है, उसे अवसर-वादी आलोचक उत्कृष्ट कविता बता रहा है, क्योंकि उसके शब्दों की जोड़-तोड़ करने वाला उसके गुट का है। जीवन में जोड़-तोड़ करने वाला जैसे उसे बड़ी सफलता मानता है, वैसे ही शब्दों की जोड़-तोड़ मात्र को वह कविता मानता है और कुर्सी के बल पर दूसरों से भी मनवाता है।

युवा कवियों के सामने आज यह बड़ी चुनौती है कि वे आज की हिन्दी कविता, को गद्यात्मकता से कैसे मुक्त करें। मेरे विचार में कविता में लयात्मकता का समा-वेश करके इस चुनौती का सामना किया जा सकता है। इसका मतलब यह नहीं कि मैं कविता की सफलता की अन्तिम शर्त लय को मानता हूं और कविता में समन्वित अन्य तत्त्वों के महत्त्व की उपेक्षा करता हूं। पर आज की परिस्थितियों में कविता में लयात्मकता पर बल देने की आवश्यकता है। सहज कविता की यह अनि-वार्य विशेषता भी है।

—सुधेश

सामना

पत्थर-पत्थर
जितना पटका
उतना उभरा,
पत्थर-पत्थर
जितना कुचला
उतना उछला,
कीचड़ कीचड़
जितना धोया
उतना सुथरा,
कालिख कालिख
जितना साना
उतना निखरा,
ज्वाला ज्वाला
जितना पिघला
असली सोना
बनकर निखरा।

—महेन्द्र भटनागर (ग्वालियर)

कुछ हाइकु

खुला घूंघट
देखता रह गया
उषा का मुख।

रहा खेलता
जनम मरण की
आंख मिचौनी।

—मुकेश रावल (आनन्द, गुजरात)

सुई की चुभन

सुई-चुभन सी हुई ज़िन्दगी
कहीं टांक दो, कहीं टांग दो,
बीच सड़क फुटपाथ कहीं पर
लावारिस का खून बांट दो।
शब्दों पर हो नया मुलम्मा
भावों को बस तुरत छांट दो,
कविता बनी आज ज़िन्दगी
कहीं जोड़ दो कहीं काट दो।

अंजनी कुमार दुबे 'भावुक' (असम)

साथी की तलाश

मुझे चाहिए साथी केवल साथी
जीवन साथी नहीं चाहिए
वह अधिकार जताता है जीवन पर भी
सब चीज़ों को सिर्फ देखता
शंका की आंखों से
हर औरत है उसकी सौत
हरजाई प्रत्येक मर्द।
जीवन-साथी से बहस नहीं हो सकती
केवल हो सकता रूठना और मनाना
कभी कभी बासी प्यार
प्रत्येक हंसी है उसके लिए व्यंग्य
सभी उक्तियों का उत्तर है शोख हंसी।
मुझे चाहिए केवल साथी
जिससे बहस करूं लड़ूं मरूं
आखिर में जीत-हार सब हो समान।

—वीरेन्द्र सक्सेना (दिल्ली)

एक भोर

भोर रवि का तेज पाकर
नवेली बनती दुल्हन,
यौवन तेज उसका ही चमकता
रजत आकाश से छन।
अलस उल्लास में वह घूम आती
घर गली आंगन
नाचती वह खेत में खलिहान में
श्रम का नाच
छेड़ती है कर्म की प्रियतान।
थक कर चूर होकर
विश्रान्ति पाती
सन्ध्या-गोद में नित भोर।

—रेखा व्यास (दिल्ली)

सड़क

सड़क जाती है
हमेशा घरों के बाहर
नहीं वह लौटती है घर,
पसरी पड़ी है दूर तक प्रतीक्षा में
पांव कोई चले
सन्नाटा मिटे
थकी हारी शाम का,
उदासी हटे
अधखुली बन्द आंखों की।
सड़क पर बोलती न कुछ
धैर्य धरती का समेटे
मौन नित
क्या तपोरत है
या भीड़ के भूचाल की प्रतीक्षारत?

—सुरेन्द्र 'नीलकण्ठ' (जयपुर)

मेरे लिए

सरोवर में खिले इतने कमल
मेरे लिए नहीं है एक भी
क्या नहीं अन्याय ?
कमलजल में थरथराते पात
तट से देखती हूं
उन पर भ्रमर की पांत
प रस मधु गन्ध में यों स्नात
ज्यों बिना मौसम हुई
प्यार की बरसात ।
मणिमाणिक्य-विजड़ित मुग्ध-सा आकाश
ताकता है धरा के वक्ष ।
इतने बड़े संसार में
क्या नहीं मेरे लिए ऐसी सुबह या शाम ?

—कुसुमांजलि शर्मा (उरई)

कहां से लाऊं

पतझड़ के इस मौसम में
गुल गुलज़ार कहां से लाऊं ?
सभी यहां पर लूट रहे हैं
दिल में प्यार कहां से लाऊं ?
जीवन तो है लू का झोंका
शीत बयार कहां से लाऊं ?
जीवन में जब ज़हर घुला है
सरस फुहार कहां से लाऊं ?

—फाल्गुनी घोष (महुदा, बिहार)

मैं भी हूं

लाखों सितारे जगमगाते
एकतारा मैं भी हूँ,
अंधेरी राह खोये जो
उनको इशारा मैं भी हूं।
उफनती नदी में खो गया
वह किनारा मैं भी हूं,
चांद को तकता चकोर
नयन-तारा मैं भी हूं।

—महिमा शर्मा (दिल्ली)

ग़ज़ल

सुलगती धूप थकते पांव मीलों तक नहीं पानी,
बताओ तो किधर धोऊं सफर की मैं परेशानी ?

इधर भागूं उधर भागूं, जहां जाऊं वहीं पाऊं,
परेशानी, परेशानी, परेशानी, परेशानी ।

यहां मेरी लड़ाई सिर्फ इतनी रह गई यारो,
गले के बस ज़रा नीचे खड़ा है बाढ़ का पानी।

बड़ा सुन्दर-सा मेला है मगर उलझन यही मेरी,
नज़र में है किसी खोए हुए बच्चे की हैरानी।

कुतरने आ गये अमरूद पेड़ों पर नए पंछी,
उड़ाने की मनाही है यही है हुक्मे सुल्तानी।

—हरेराम समीर (फ़रीदाबाद)

सांस अकेली आती-जाती,
वही अकेलेपन की साथी ।

दिन-भर सूरज चले अकेला,
धरा अकेली चक्कर खाती ।

नद-नाले सब गुम हो जाते,
नदी अकेली बहती जाती ।

एक अकेला निर्झर चलकर—
फोड़े दृढ़ पर्वत की छाती ।

रात हुई, तो दूर विजन में—
जले अकेली दीपक-बाती ।

देख टूटता नभ में तारा,
याद अकेलेपन की आती ।

मैं गाता, मैं खुद ही सुनता,
ध्वनि खंडहर की वापस आती ।

मन की सीख—अकेला चल तू,
एक किरण तम-तोम भगाती ।

है वरदान अकेलापन यह,
भीतर की दुनिया मिल जाती।

मैं न अकेला, आज मिली है—
उसकी एक पुरानी पाती ।

—चिरंजीत (दिल्ली)

तेरे दीदार को दिल मचलता रहा,
दीप सूने शिवालय में जलता रहा।

सांस में नाम तेरा घुला इस कदर,
अश्क आंखों में चुपके से पलता रहा ।

याद आई तो आती चली ही गई,
दिल जो मचला मचलकर मचलता रहा।

'सहज कहानी' के बहाने सहजता

'सहज कहानी' से हमारा अभिप्राय उस मूल कथा-रस से है, जो कहानी की अपनी खास चीज़ है और जो बहुत-सी 'नयी' कही जाने वाली कहानियों में एक सिरे से नहीं मिलता।···कहानी के सारे प्रयोग···इस सहज कथा-रस के चौखटे में किये जाने पर ही सार्थक हो सकते हैं।

कथा-रस सबसे पहले कथाकार की कथा-दृष्टि में होता है।···घटना अपने आपमें कहानी नहीं है। वस्तुत: घटना कहानी की घटना ही नहीं है, जब तक कि कहानीकार अपने रचना-शिल्प से उसको अपनी कहानी के भीतर सफलतापूर्वक प्रतिष्ठित नहीं कर देता। और इसके लिए ज़रूरी है कि सबसे पहले उसका रचनाकार मन उस रूप में उसको देखे।···वह देखना ही रस के व्यापकतम अर्थ में, सहज संवेदना के अर्थ में सरस देखना है।

साहित्य कभी सामान्य में नहीं रहता, उसकी भूमि यही विशेष है, जो व्यक्ति की अपनी, नितान्त अपनी, सहजता है और अपने इस सहज वैशिट्य को समझना ही अपने साधारण जीवन-व्यापार में और अपने रचना कर्म में अधिकाधिक सहज होना है।

अपनी सहज अनुभूति को सहज ढंग से कह पाना ही साहित्य की वह कीमियागिरी है, जिससे मुर्दा शब्द जी उठता है।···सार्थक, सम्पूर्ण रचना को अपनी वकालत में पोथे रँगने की ज़रूरत नहीं पड़ती।···उसके लिए (लेखक के लिए—सं०) सहज भाव से जीना और जीवन के आघातों का वैसे ही सहज उन्मुक्त भाव से अपनी संवेदनाओं के रूप में उत्तर देना ज़रूरी है।

लेकिन यह सहज स्थिति समाप्त हो जाती है जब हम बाह्य दबावों में पड़कर जीवन को अपनी खुली आँखों न देखकर रंगीन चश्मों के पीछे से देखने लगते हैं, या जीवन को उसकी समग्रता में न देखकर उसके किसी खण्ड को पकड़कर बैठ जाते हैं। जहां लेखक को लिखते समय यह चिन्ता सताने लगे कि उसकी रचना 'आधुनिकता' के मानदंड पर खरी उतरती है या नहीं···वहीं वह अपने ही को झुठलाना शुरू करता है और सहज संवेदना के स्थान पर आरोपित बौद्धिक लेखन की परिपाटीग्रस्त, अनुकरणमूलक छद्म लेखन की शुरुआत होती है।

हम भी नयेपन के हामी हैं, पर उस अन्धे अनुकरणमूलक नयेपन के नहीं, जो अपने दिक्काल से उखड़ा हुआ है, उस सहज नयेपन के जो···बदलते हुए जीवन और समाज का सहज धर्म है, जिसके पीछे हमारे देशकाल का साक्ष्य है और जो हमारी सहज मानसिकता का अंग बन सका है।

सहजता की परिभाषा कठिन है, क्योंकि उसके उतने ही आयाम हैं, उतने ही कोण, जितने जीवन के।···सहज वह है जिसमें आडम्बर नहीं है, बनावट नहीं है,

ओढ़ा हुआ मैनरिज्म या मुद्रा दोष नहीं है।···सहज रचनाकार वह है जो सहज मुक्त भाव से जीवन के मैदानों और गलियों में विचरता है और वैसी ही उन्मुक्त संवेदनाओं से जीवन के प्रति रिएक्ट करके सहज भाव से लिखता है।···भविष्य उन्हीं सहज लिखने वालों का है। नक़्क़ालों का कोई भविष्य नहीं है, क्योंकि वे आज एक की नक़ल करते हैं, कल फैशन बदलने पर किसी दूसरे की नक़ल करेंगे और इसी तरह नक़ल करते-करते चुक जाएंगे, चुक गये हैं।

पिछले दिनों रचनाकार की सहज साहित्य-चेतना को कभी नये शिल्प के नाम पर और कभी आधुनिक भावबोध के नाम पर भटकाने का बड़ा विपुल आयोजन किया गया और आज भी किया जा रहा है।

यह समझना कि उन जटिल स्थितियों को उसी तरह की कुछ जटिल रेखाओं या शब्दों का आकार दे देना अनुरूप कला या साहित्य की सृष्टि करना है, बहुत बड़ी भूल है। जटिल को बोध और संवेदना के स्तर पर सहज करके समझने और ग्रहण करने की और फिर उसे उसी सहज रूप में साहित्य में ढालने की प्रक्रिया निश्चय ही अत्यन्त जटिल है पर सार्थक और मार्मिक साहित्य-सृष्टि उसके बिना नहीं हो सकती।

(प्रसिद्ध कथा शिल्पी अमृतराय की पुस्तक 'आधुनिक भावबोध की संज्ञा' से साभार)

'सहज कविता' के स्वामित्व तथा अन्य ब्योरे के विषय में विवरण

1. प्रकाशन का स्थान—दिल्ली
2. प्रकाशन की अवधि—त्रैमासिक
3. मुद्रक तथा प्रकाशक का नाम—श्रीमती सुशीला शर्मा
   राष्ट्रीयता—भारतीय
   पता—1335 पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
4. सम्पादक का नाम—डॉ० सुधेश
   राष्ट्रीयता—भारतीय
   पता—1335 पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
5. उन व्यक्तियों के नाम और पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है तथा उन भागीदारों तथा शेयर होल्डरों के नाम और पते जो पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक शेयर रखते हों—
   श्रीमती सुशीला शर्मा, भारतीय,
   1335 पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110067

मैं सुशीला शर्मा इसके द्वारा घोषणा करती हूं कि उपर्युक्त विवरण मेरी अधिकतम जानकारी और मेरे विश्वास में सही है। —(हस्ताक्षर) सुशीला शर्मा

SAHAJ KAVITA, A Hindi Quarterly/R. No. 5/AL/1993

साहित्य कला परिषद, दिल्ली

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली सरकार का सांस्कृतिक विभाग)

4/6-बी, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

साहित्य कला परिषद दिल्ली के नागरिकों को घर-घर पहुंचकर कला एवं संस्कृति प्रदान कर रही है।

साहित्य कला परिषद् के अन्तर्गत विभिन्न योजनाएं :—

संगीत, नृत्य, नाटक, एवं ललित कलाएं।

- युवा कलाकारों को आगे प्रशिक्षण हेतु संगीत, नृत्य, नाटक तथा ललित कलाओं के क्षेत्र में छात्रवृतियां/फैलोशिप प्रदान करना।
- युवा महोत्सव। विभिन्न कलात्मक क्षेत्रों में कार्यरत युवा कलाकारों के लिए पूरी तरह समर्पित—संगीत, नृत्य, नाटक और ललित कलाओं का एक उत्सव।
- राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों की खोज करने के लिए वार्षिक—संगीत, नृत्य तथा नाटक उत्सव।
- दिल्ली शहर तथा देहात के निवासियों के लाभार्थ कला एवं संस्कृति के कार्यक्रम।
- राष्ट्रीय एकता तथा सांस्कृतिक जागरण के उद्देश्य से दिल्ली के कलाकार दूसरे प्रांतों में भेजे जाते हैं तथा दूसरे प्रांतों के कलाकार 'कला प्रदर्शन' के लिए दिल्ली बुलाए जाते हैं।
- प्रतिवर्ष साहित्य कला परिषद्—संगीत, नृत्य, नाटक तथा ललित कलाओं के क्षेत्र में शानदार योगदान के लिए दिल्ली के श्रेष्ठतम कलाकारों को सम्मानित करती है।
- रचनात्मक लेखन में लगे लेखकों को प्रोत्साहित करने के लिए परिषद् नाट्य-लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन करती है।
- पुरस्कृत नाटकों के मंचन हेतु साहित्य कला परिषद् द्वारा नाट्य-उत्सवों का आयोजन किया जाता है।
- परिषद् कला-शिविरों का आयोजन करती है, जिनमें वरिष्ठ तथा उभरते हुए कलाकार, कला एवं शिल्प के क्षेत्र में खुले वातावरण में साथ-साथ काम करते हैं।
- ललित कला की प्रदर्शनियों के लिए नि:शुल्क कलादीर्घा की सुविधा।

सुरेन्द्र माथुर (सचिव)

साहित्य कला परिषद्

श्रीमती सुशीला शर्मा द्वारा 1335 पूर्वांचल, जवाहरलाल नेहरू विश्व-विद्यालय, नई दिल्ली-110067 से प्रकाशित, तरुण प्रिंटर्स 9267 रोहतास नगर, शाहदरा, दिल्ली-32 द्वारा मुद्रित —अवैतनिक सम्पादक डॉ० सुरेश।

आवरण—राजेश शर्मा